

न्यायालय राजस्व मण्डल, मध्य प्रदेश, ग्वालियर

समक्ष : अशोक शिवहरे

सदस्य

निगरानी प्रकरण क्रमांक 389 / 111/2014 विरुद्ध आदेश दिनांक
19 सितम्बर 2013 - पारित- द्वारा - अनुविभागीय अधिकारी, लवकुशनगर
जिला छतरपुर - प्रकरण क्रमांक 05/2012-13 पुनरावलोकन

- 1- रतन पुत्र स्वर्गीय राजू पाल
- 2- शिवरतन पुत्र स्वर्गीय राजू पाल
- 3- दिनेश पुत्र स्वर्गीय राजू पाल
अना. 2 एवं 3 अल्पवयस्क सरपरस्त
भाई रतन पुत्र राजू पाल निवासीगण
कस्वा चंदला तहसील चंदला
जिला छतरपुर मध्य प्रदेश

---आवेदकगण

विरुद्ध

- 1- श्रीमती छबिरानी पत्नि स्व. पंखिया पाल
- 2- मईयादीन पुत्र फदाली पाल
निवासीगण बड़ापुखा (चंदला)
तहसील चंदला जिला छतरपुर म0प्र0

---अनावेदकगण

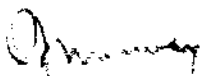
आवेदकगण के अभिभाषक श्री मुकेश भार्गव
अनावेदकगण के अभिभाषक श्री के.के.द्विवेदी

आदेश

(आज दिनांक 10-6-2014 को पारित)

यह निगरानी अनुविभागीय अधिकारी, लवकुशनगर जिला छतरपुर द्वारा
प्रकरण क्रमांक 05/12-13 पुनरावलोकन में पारित आदेश दिनांक 19-9-13 के
विरुद्ध म0प्र0भू राजस्व संहिता, 1959 की धारा 50 के अंतर्गत प्रस्तुत की गई है।

2/ प्रकरण का सारंश यह है कि ग्राम चंदला स्थित भूमि के भूमिसब्ज्जम्भ
राभाषीन पुत्र कामता प्रसाद की मृत्यु होने पर पटवारी ने ग्राम की नामान्तरण



पंजी के सरल कमांक 125, 126 पर दिनांक 15-10-66 को प्रविष्टि की जिस पर अपठनीय हस्ताक्षर एवं अपठनीय दिनांक के हस्ताक्षरकर्ता ने मृतक भूमिस्वामी के उत्तराधिकारी के रूप में भाई के पुत्र के पुत्र भैयादीन व हलका का नामान्तरण प्रमाणित कर दिया।

श्रीमती छबिरानी पत्नि स्वर्गीय पंखिया पाल ने तहसीलदार चंदला के समक्ष म०प्र०भू राजस्व संहिता की धारा 51 के अंतर्गत आवेदन प्रस्तुत कर उपरोक्त नामांतरण के पुनर्विलोकन की मांग की, जिस पर तहसीलदार ने प्रकरण कमांक 96 अ 6 अ/12-13 पंजीबद्ध कर अनुविभागीय अधिकारी, लवकुशनगर को पुनरावलोकन अनुमति प्रस्ताव प्रस्तुत किया, अनुविभागीय अधिकारी लवकुशनगर ने प्रकरण कमांक 05/12-13 पुनरावलोकन पंजीबद्ध किया तथा आदेश दिनांक 19-9-13 से पुनरावलोकन अनुमति प्रदान की। इसी आदेश से परिवेदित होकर यह निगरानी की गई है

3/ निगरानी मेमो में उठाये गये बिन्दुओं पर उभय पक्ष के अभिभाषकों के तर्क सुने तथा उपलब्ध अभिलेख का अवलोकन किया गया।

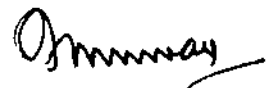
4/ आवेदकगण के अभिभाषक का तर्क यह है कि पूर्व भूमिस्वामी कामता थे और कामता के दो पुत्र रामाधीन एवं फदाली थे। रामधीन के एक पुत्र था जो निसंतान मरा और फदाली के दो पुत्र भैयादीन एवं हलके हुये जिसके कारण रामाधीन की मृत्यु के बाद वही वारिस थे और जिसके कारण वर्ष 1966 में उनका नामान्तरण हुआ है और इतनी लम्बी अवधि बाद नामान्तरण को पुनः री ओपिन नहीं किया जा सकता। अनावेदकगण के अभिभाषक का तर्क है कि वादग्रस्त भूमि रामधीन के नाम थी, उसकी मृत्यु के बाद उसका पुत्र पंखिया है जिसका विवाह छबिरानी के साथ हुआ जो आज जिन्दा है। पंखिया की मृत्यु के बाद रामाधीन के नाम की भूमि महिला छबिरानी को जायेगा, जबकि हलका पटवारी ने त्रुटिपूर्ण ढंग से कपट करके रामाधीन की भूमि पर गलत सजरे के आधार पर नामान्तरण कराया है, जिसके कारण अनुविभागीय अधिकारी ने

[Handwritten signature]

पुनरावलोकन की अनुमति देने में गलती नहीं की है उन्होंने निगरानी खारिज करने की प्रार्थना की।

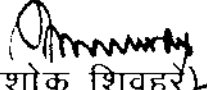
4/ उभय पक्ष के अभिभाषक के तर्कों पर विचार करने एवं उपलब्ध अभिलेख के अवलोकन से पाया गया कि यह सही है कि रामाधीन की मृत्यु के बाद हलका पटवारी ने ग्राम की नामान्तरण पंजी के सरल क्रमांक 126 पर दिनांक 15-10-66 को प्रविष्टि की, जिस पर अपठनीय हस्ताक्षर एवं दिनांक के हस्ताक्षरकर्ता ने मृतक भूमिरवागी के उत्तराधिकारी के रूप में भाई के पुत्र के पुत्र भैयादीन व हलका का नामान्तरण प्रमाणित किया है किन्तु नामान्तरण पंजी की प्रमाणित प्रतिलिपि के अवलोकन से मृतक रामधीन के सजरे में उसके पुत्र पंखिया अथवा पंखिया की पत्नि को नहीं दर्शाया है और न ही महिला छविरानी को व्यक्तिगत सूचना दी गई है। जैसाकि आवेदकगण के अभिभाषक महिला छविरानी को अथवा मृतक रामधीन के पंखिया को पुत्र न होना बताकर लावल्द फोट होने का तथ्य बता रहे हैं, किन्तु यह निगरानी न्यायालय में आपत्ति का विषय नहीं है अपितु विचारण न्यायालय के समक्ष रखे जाने वाला तथ्य है। इस प्रकरण में देखना यह है कि क्या तहसीलदार अपने पूर्वाधिकारी द्वारा किये गये नामान्तरण आदेश को री-ओपिन कर सकते हैं एवं नामान्तरण पंजी के सरल क्रमांक 126 पर दिनांक 15-10-66 को हुई प्रविष्टि पर अपठनीय हस्ताक्षर एवं अपठनीय दिनांक के हस्ताक्षरकर्ता द्वारा किये गये नामान्तरण को री-ओपिन किये जाने हेतु लंबी अवधि बाद पुनरावलोकन की अनुमति दी जा सकती है ?

1. भू राजस्व संहिता, 1959 (म.प्र.) धारा-51 - नायब तहसीलदार/तहसीलदार द्वारा किये गये नामान्तरण को री-ओपिन करने के आधार पाये जाने पर वर्तमान पदस्थ नायब तहसीलदार/ तहसीलदार सक्षम स्वीकृति उपरांत पूर्वाधिकारी द्वारा पारित आदेश का पुनर्विलोकन कर सकते हैं।
2. भू राजस्व संहिता, 1959 (म.प्र.) धारा-110 - ग्राम की नामान्तरण पंजी पर अपठनीय हस्ताक्षर एवं अपठनीय दिनांक के हस्ताक्षरकर्ता द्वारा किया नामान्तरण - ऐसा नामान्तरण प्रारंभ से संदिग्ध है - तहसीलदार को अधिकार है कि व्यथित पक्षकार के आवेदन पर अथवा स्वयं ऐसी प्रविष्टि को शुद्ध करने की कार्यवाही करे।



विचाराधीन प्रकरण में तहसीलदार द्वारा बरिष्ठ न्यायालय अनुविभागीय अधिकारी से पुनर्विलोकन की अनुमति प्राप्त की गई है और तहसीलदार के समक्ष उभय पक्ष को अपना-अपना पक्ष रखने का समुचित अवसर प्राप्त है जिसके कारण तहसीलदार के प्रस्ताव पर अनुविभागीय अधिकारी लवकुशनगर द्वारा आदेश दिनांक 19-9-13 से पुनरावलोकन की अनुमति प्रदान करने में किसी प्रकार की त्रुटि करना प्रतीत नहीं होता है

5/ उपरोक्त विवेचना के आधार पर अनुविभागीय अधिकारी लवकुशनगर जिला छतरपुर द्वारा प्रकरण कमांक 05/12-13 पुनरावलोकन में पारित आदेश दिनांक 19-9-13 विधिवत् होने से हरतक्षेप योग्य नहीं है। अस्तु निगरानी अस्वीकार की जाती है।


(अशोक शिवहर)
सदस्य
राजस्व मंडल
मध्य प्रदेश ग्वालियर